शब्द

महात्मा गांधी महाविद्यालय

फतेहपुर (उ०प्र०)

संरक्षक

डॉ० धर्मध्वज त्रिपाठी

पी०एच०डी०, डी०लिट्०

प्राचार्य

संपादक मण्डल:

डॉ० (श्रीमती) रेखा श्रीवास्तव, प्रधान सम्पादक

डॉ० मो० इस्माइल 'आजाद'

डॉ० ओंकार नाथ द्विवेदी

प्रो० मुज़ाहिद रज़ा

काम-चित्रण और कामेंलीन

❑ डॉ० चन्द्रलेखा

समय के इतिहास में उस समय की संस्कृति पनपती है। अतीत, वर्तमान और भविष्य अपनी अपनी सापेक्षता में दृस्टव्य होते रहते हैं। जैसे मनुष्य चलते हुए अपने दोनों पॉवों का उपयोग करके ही सहजता से चल सकता है। इसका एक पांव अतीत और दूसरा भविष्य है इन दोनां के आगे पीछे आने जाने में जो समय लगता है पह वर्तमान होता है। जिसका अंकन समसामयिक काल में होता है। हर मनुष्य अपने अपने समसामयिक काल में उसे कहीं न कहीं रेखांकित करता जाता है। विचारकों का कहना है कि हमारे देश की संस्कृति पांच हजार सालों से या उससे भी आगे से चली आ रही है। क्या यह सिर्फ हमारा अतीत है ? या उसमें कुछ जुड़ा है ? वह कृति क्या है ? जिसे संस्कृति कहते हैं। क्या गौरवमय इतिहास से गौरवमय वर्तमान और भविष्य हो सकता है ? ऋगवेद या उससे, भीद पहले के समय में, क्या पही परिस्थितियां थी ? सालों की समय कड़ियों में मनुष्य अपना रूप निहांरता है, कुछ काटता है, कुछ जोड़ता है या उन्हीं सालों को ढ़ोता फिरता है ? हमारे वेद, पुराण, शास्त्रों में जो कुछ भी मिलता है क्या वह समस्त भारत का चित्रण है ? या कुछ लोगों ने, कुछ लोगों के शास्त्रों के नजरिए से जो जांचा, परखा उसीका चित्रण है ? इतिहास लिखने वालों ने, शास्त्रकारों ने जो शास्त्रों में लिखा उससे परे कुछ था या नहीं ? उसमें से सामान्यजन की कृति दिखती है या विशेष की ? अगर हम सूक्ष्मता से सोचें तो एक ही विचार के बहुत सारे विरोध ाभास उस जमाने में भी रहे होंगे और आज भी वे है ही। शेमिला थापर एक जगह लिखती हुैं कि विविधतावाला हमारा समाज जब अपने निर्माण करता है तब उस प्रक्रिया में ऐतिहासिक तथ्यों की तोड़-मरोड़ हो सकती हैं। अतीत के खजाने से हम वही चुनते हैं जो हमारी वर्तमान आवश्यकताओं के अनुकूल होता है।

हमारे यहां धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के विचार की स्वतंत्र परंपरा मिलती है। इस लेख में हमारा चिंतन 'काम' पर होने के कारण हम सिर्फ काम में ही उलझे। इसे मोक्ष से भी पहले क्यों रखा गया है ? सामान्य मनुष्य अपने सामान्य, धर्म का पालन करते हुए 'अर्थ' प्राप्ति करता है, 'काम' को भी भोगता है जब इन तीनों कक्षाओं से गुजरता है तभी उनसे मोक्ष भी प्राप्त कर सकता है।

आज के पेट्रो, डॉलर की संस्कृति में किस चीज की कामना करें और किस से मोक्ष प्राप्त करें! क्या है हमारा आज का धर्म या अर्थ ? वही वेद........पुराण........रामायण. ......महाभारत....या फिर प्रस्तर युग......... आरण्यक युग...........कृषि युग..........औद्योगिक क्रांतिवाला धर्म, अर्थ ? संस्कृति तो वह है जो जीवन के साथ बदलती है। संक्रमण, संकर की समस्या तब भी थी और अब भी है। या कहें आज कुछ ज्यादा ही है। हर जगह पर कम्प्यूटर का बोलबाला हैं, टेक्नोलोंजी का उजाला है, साइबर का झमेला है, इन्टरनेट का जाला है, जानकारी का खज़ाना है। सौ सौ

चेनलों से अपने अपने अर्थशास्त्र अनुरूप विज्ञापनवाले विज्ञापनों के ढोल बजाते हैं, बजाना उनका धर्म है, सुनना, देखना हमारी नियति बनतही जा रही है। साहित्यकार भी तो अपनी संवेदना अनुसार ही अपना धर्म तलाश करेगा और वाचक अपने धर्म अनुसार उसे तलाशेगा। अपने जीवन की संवेदना अनुसार हमें हमारे पुराने मिथकों को जोड़ना या बदलना होगा। 'काम' शब्द की व्यक्ति की बात करते हुए 'कामसूत्र' में कहा गया है...

'जिस प्रकार धर्म से बुद्धि का संबंध है, उसी प्रकार शरीर का अर्थ से, सन का काम से और आत्मा का मोक्ष से संबंध है। इन्हीं अर्थ, धर्म काम में मनुष्य जीवन के रति, मान, ज्ञान, न्याय आदि की समस्त कामनाओं का समावेश होता है। तात्पर्य यह है कि जीवन की अभिलाषा अर्थ में, स्त्री, पुत्र आदि काम में, यश ज्ञान और न्याय की धर्म में और परलोक की कामना मोक्ष में समाविष्ट हो जाती है।''

'काम' शब्द वास्तव में स्त्री-पुरुष के समागम तक ही सीमित नहीं है। एक और मनुष्य की प्रत्येक प्रकार की कामना का अर्थवाचक शब्द काम है तो दूसरी ओर प्रेम और अनुराग का व्यंजक भी है, काम या वासना, कामना और रति, काम और कामना, काम और सेक्स। यहां पर अंग्रेजी के एक शब्द ब्नचपक का अर्थ जानें तो बेहतर होगा। एक अर्थ है 'रोमन गॉड ऑफ लव', दूसरा अर्थ है - पिक्चर ऑर स्टेच्यू ऑफ अ ब्यूटिफुल बॉय विथ विंग्स एण्ड अ बो एण्ड एरॉ, रेप्रेसेन्टिंग लव' अब इस अर्थ के साथ हमारे 'कामदेव' का चित्रण भी याद करें तो बुनियादी तत्वों में कोई अलगाव नहीं दिखता। बहुत बार यह भी सुनते हैं कि काम और सेक्स में मूलभूत अंतर यह है कि 'काम' धर्म से सम्बद्ध होने के कारण उसमें संयम है, नियंत्रण है, जबकि सेक्स में इस प्रकार का नियंत्रण नहीं है। हांलाकि ब्रह्मा-सावित्री, ब्रह्मा-गायत्री, इंद्र और गौतमी का संबंध, अलग अलग समय पर पुराणों में उर्वशी और परुखा का संबंध, पुत्र प्राप्ति के लिए था राज्या का उत्तराधिकार प्राप्त करने में संपूर्ण महाभारत की उत्पत्ति के ऐसे कई उदाहरणर हैं जो हमारे ढ़कोसलों को उजागर करते हैं, तब कौन से ध र्म का पालन हुआ था ? जैसे हमारा 'काम' शब्द अलग अलग घटाओं में व्यक्त होता है वैसे ही 'क्युपिड' शब्द की भी छटाएं होंगी ही। पाश्चात्य चिंतन सिर्फ उच्छृखल ही नहीं है उसके भी अलग अलग पहलू है। आज तो हम 'इडिपस कुण्डा' से भी, आगे चलकर स्वलैंगिक, समलैंगिक से होते हुए ' ' तक पहुंच चुके है, 'फायर' फिल्म उसका उदाहरण थी। इन लोगों के संगठन आज तृतीय जाति के रूप में मान्यता प्राप्त कर चुके हैं, हमारे इतिहास के साथ साथ आज हम 'लिबिडो' की विस्तृता से होते हुए फ्राइड, एडलर युग से भी 'ग्रीक पौराणिक गाथाओं में एक म्तवे नामक देवता का उल्लेख मिलता है, जिसे ग्रीक़ में सृष्टि का उत्पादक माना जाता है और जो प्रेम का देवता है। इस 'इरोस' देवता को काम का उदात्त रूप माना जा सकता है।

'काम' प्रेरक है तो विध्वंसक भी है, फ्रायड जीवन की प्रमुख प्रेरक शक्ति 'काम' को मानत थे जबकि युग 'लिबिडो' शब्द को अधिक विस्तृत करते हैं, फ्राइड की कामवृत्ति

को, एडलर की आम्तस्थापन-प्रवृत्ति को सम्मिलित करते हैं। वे उसे जीवन की वह प्रारंभिक और प्रेरक शक्ति मानते हैं, जो मानच के सभी व्यवहारों में होती है। वह शक्ति 'जीवन शक्ति' या 'मनशक्ति' कही जा सकती है। यह वह शक्ति है तो विकास, क्रिया और जनन तीनों लक्ष्मी में अपने को व्यक्त करती है।

'विवाह की मुसीबतें' पुस्तक में दिनकरजी लिखते हैं-काम संबंध यौन नैतिकता से है, काम का गृहस्थी से संबंध है, काम से प्रेरणा पाकर मनुष्य ऊँचा उठता है और काम के कारण ही बहुत से लोगों को आत्महत्या करनी पड़ती है। घर छोड़कर वैराग्य लेना पड़ता है। इसलिए काम पर चिंतन करना केवल चिंतन का रस लेने के लिए आवश्यक नहीं है, वह अधिक आवश्यक इसिलिए हो गया कि बदली हुई परिस्थितियों में काम का उचित संबंध क्या हो, इसका हमें अनुसंधान करना है।'

मुझे तो लगता है कि अपने वैवाहिक जीवन में ही नहीं पर जीवन में जन्म से लेकर मृत्यू तक काम हमारे साथ अलग अलग सूक्ष्म पहलू में विद्‌यमान रहता है। उसे दबाने से वह द्विगुणित रूप में उभरता है, उछलता है, कभी कभी विकृति में परिवर्तित हो जाता है। सही तरीका यही होगा कि उसे स्वीकारे, समझे, विश्लेषण करें और अपनी विवेक बुद्धि से उसका शमन भी करें। सिर्फ काम को समझने से ही जिंदगी पूरी समझ में नहीं आति यह जितना सही है, उतना ही, यह भी सही है कि उसको समझे बिना भी जिंदगी विवाह के बाद भी कंवारी रह जाती है। 'कार्मलीन' के ही मामले में नहीं पर हरद मनुष्य के मामले में भी काम-चिंतन उसका शमन न हो तो मोक्ष का अर्थ समझ में नहीं आता। शायद इसलिए मंदिरों की दीवारों के बाहरी हिस्सों में भी हमारे यहां उन मुद्राओं को अंकित किया गया है कि शरीर के द्वारा ही आत्मा तक पहुंचा जाता है एिक बार पहुंच गए तब वहां टिकने के लिए भी शारीरिक, मानसिक, जागृत अवस्था आवश्यक हो जाती है। 'पूर्णकाम' की जो अवस्था हमारे यहां स्वीकारी गई है वहां भी सतत जागृत अवस्था मानी गई है। काम का रूप सूक्ष्म रूप में मृत्यू तक होता ही है क्योंकि सिर्फ हमारा ही जन्म काम से हुआ है ऐसा नहीं है पर संपूर्ण सृष्टि का कारण भी काम ही है। तो फिर उसमें मुक्ति पाने के ढ़कसले क्यों खड़े करें ? इसकी बजाय मुक्त होकर उसके बारे में सोचें, काम सिर्फ संभोग ही नहीं पर समाधि तक पहुंचने का मार्ग भी है माना कि कार्मेनीन, जाहिदा, पकिजा, सीता, आदम, परवेझ, मनु आदि हम संभोग में उलझ कर रह जाते हैं। यह बात संपूर्ण मानव के जाति के लिए सत्य ही नहीं परमसत्य है और नक्कर वास्तविकता नहीं है जिसे लेखक ने चित्रित किया है। हो सकता है वासाहतिकरण प्रक्रिया में जो नयी उभरती संस्कृति पनप चुकी थी उसे उपन्यास द्वारा दिखाकर अपनी श्रेष्ठता का दावा किया गया हो क्योंकि हरेक को अपनी संस्कृति श्रेष्ठ ही लगती है। बाहर से जो आया है उसे अपनी संस्कृति से बाहर दिखाने का काम उपन्यास में किया गया है।